एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कद्दुवर्गीय फसलों में फाइटोप्लाज्मा से होने वाले रोग एवं उनका नियन्त्रण

(*सुनिता कूडी[1], रामस्वरूप जाट[2], सुरेन्द्र सिंह बाना[2] एवं सोहन लाल काजला[3])
[1]राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान
[2]कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश
[3]राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा, जयपुर
* sunitakoodi100@gmail.com

फाइटोप्लाज्मा और उनसे जुड़े रोग सब्जी उत्पादन के लिए एक उभरता हुआ खतरा है जिससे दुनिया भर में उपज का गंभीर नुकसान होता हैं। फाइटोप्लाज्मा फ्लोएम–सीमित प्लेमॉर्फिक बैक्टीरिया होते हैं, जिनमें कोशिका भित्ति नहीं होती हैं।

1. सब्जियों की फसलों के फाइटोप्लाज्मा के कारण पत्तियां छोटी, फाइलोडी, फूलों का असामान्य पत्तियों में बदलना, बड़ी कलियाँ, टहनियों और पौधों की शाखाओं के विकृत/असामान्य ब्रश जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। रोग से ग्रसित पौधों में असाधारण रूप से कायिक वृद्धि तथा फूलों में बांध्यता पैदा होने से फसल में बहुत हानि होती हैं।
2. मुख्य रूप से रोग का संचरण फुदका कीट, पौध प्रवर्धन सामग्री और बीजों के माध्यम से होता हैं।
3. राजस्थान में फाइटोप्लाज्मा जनित रोग मुख्य रूप से लोकी, तुरई, करेला और खीरा में होता हैं।

रोग ग्रस्त पौधों में लक्षण

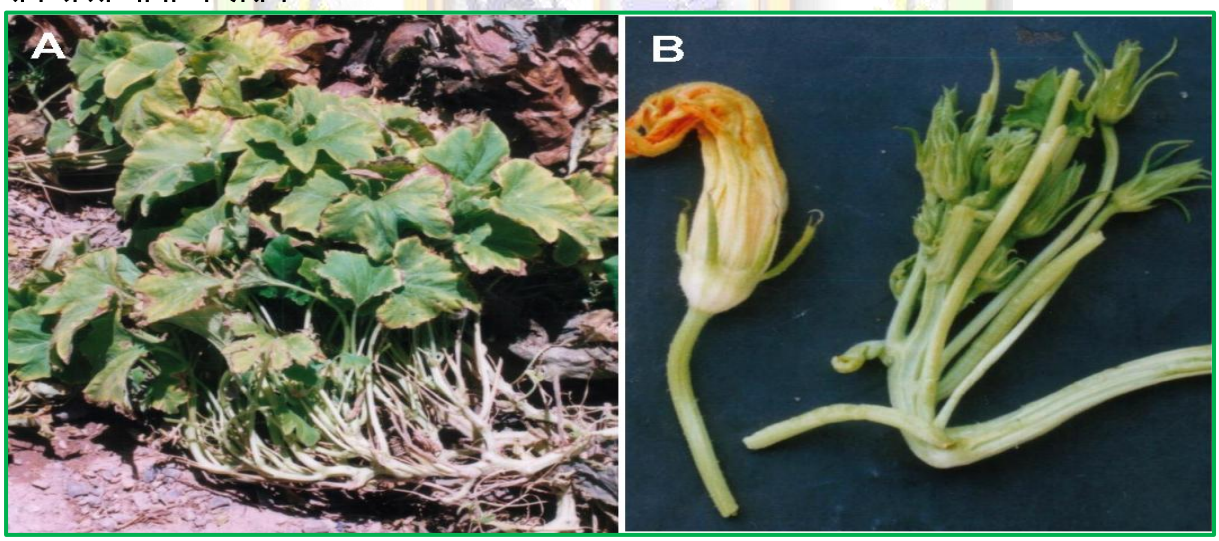

1. कुर्चीसम एवं लघु पर्ण (पत्तियों का छोटा होना)

रोग से ग्रसित पौधों की पत्तियों छोटी परन्तु पत्तियों की संख्या अधिक हो जाती हैं। फूलों की संख्या अधिक होती है, परन्तु फल नहीं बनते है तथा जो भी फल आते हैं वो आकार में छोटे होते हैं।

2. पर्णाभिता

पर्व छोटी रह जाती है फूलों के सभी भाग जैसे दलपुंज, परागकोष, पुंकेसर, वर्तिका, वर्तिकाग्र, पत्तिनुमा आकृति में बदल जाते है, जिससे पुरा पौधा बांध्य हो जाता हैं।

रोग प्रबन्धन

1. बीज हमेशा फाइटोप्लाज्मा से मुक्त रहने चाहिये।
2. रोगी पौधे को शुरू में ही उखाड़ देना चाहिये।
3. कद्दुवर्गीय फसलों की जल्दी बुवाई करनी चाहिये।
4. कद्दुवर्गीय फसलों के बीच में सुरजमुखी, ज्वार, बाजरा आदि फांसी/अन्तरासस्यन फसलें लगानी चाहिये।
5. कीटों के नियंत्रण के लिए थायोडान 0.07 प्रतिशत व फास्फोमिडान 85 एस. एल. 0.03 प्रतिशत का 10–12 दिन के अन्तराल पर छिडकाव करते रहना चाहिये।
6. खीरे व तरबूज में कीट को नियन्त्रण करने के लिए मिनरल ऑयल को पानी में घोलकर 0.75 –1. 00 प्रतिशत हर सप्ताह फसल पर छिड़काव करना चाहिये।
7. रोग रोधी किस्मों का प्रयोग करना चाहिये।